****

Divya Tulsi
Vastu Dosh Nivarak

****

!! ऊँ श्री गुरूदेवाय नमः !!

नम्र–निवेदन

यादेवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमतस्यै नमो नमः।।

ब्रह्माण्ड की असीम ऊर्जा (शक्ति) सब भूतों में अर्थात् सभी जड चेतन में पृथ्वी, जल, वायु, तेज, आकाश आदि सभी में व्याप्त है। अतः उस शक्तिरूपी असीम ऊर्जा को बार–बार प्रणाम है।

देवी वृन्दा में यह ऊर्जा व्याप्त है। अतः आधिभोतिक आधिदेविक और आध्यात्मिक तापों को शमन करने में सक्षम है। यह अदृश्य शक्ति सर्व व्यापक और कल्याणकारी मानव बुद्धि से परे है। वास्तव में देखा जाए तो यह शक्ति (ऊर्जा) पशु, पक्षी, कीट पंतग, जलचर, नभचर, देव, दानव, मानव आदि सभी के कल्याण में निरन्तर रत है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में कथा आती है कि सतयुग में महाराज केदार की पुत्री वृन्दा ने श्रीकृष्ण को पति रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की थी। श्रीकृष्ण ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिये। वृन्दा देवी की पावन तपोभूभि होने से वृन्दावन नाम विख्यात है। वृन्दावन की अधिष्ठात्री देवी श्रीवृन्दा देवी हैं। कहते हैं श्री राधारमण जी का मन्दिर पहले शालिग्राम के रूप में था फिर भक्त की भावना को पूरा करने के लिए श्रीविग्रह के रूप में परिणत हो गये। यहीं पास में देवी वृन्दा का भी मन्दिर लाल पत्थर से बना हुआ बतलाते है जो अब समय के साथ–साथ लुप्त हो गया। कुछ कहते है कि श्री गोबिन्ददेव के मन्दिर में वृन्दादेवी का मन्दिर है। (यह काम्यवन के 84 तीर्थो में आता है।)

कहने का भाव है–

तुलसी पौध न जानिये गाय ने जानो ढौर।
दोनों शक्तिरूप है, साक्षी नन्द किशोर ।।

कहते है ब्रज मे तीन वृन्दावन है। आद्य–वन कामा मे है वही कृष्ण की बाल लीलाए हुई और वहीं पर वृन्दा जी का आद्य मन्दिर है। निज–वन गोवर्धन में है जहाँ इन्द्र का दर्प मर्दन किया और तीसरा वन वृन्दावन नाम से है जहाँ रास लीलाए की।

शायद ही कोई वृन्दावन में मन्दिर होगा जो 1000 / 800 वर्ष से अधिक पुराना हो। वहाँ की पुरातन अगर है तो वह ब्रजराज–ब्रजरज–यमुना–गाय और वृन्दा।

योगीराज श्रीकृष्ण भगवान ने वृन्दा की उपादेयता को जन कल्याण हेतु वनो पर बल दिया। द्वापर के अन्तिम चरण में यमुना प्रदूषित हो गई थी और वायु और धरा की शुद्धि भी अघासुर, वकासुर, शकटासुर, तृणावर्त, धेनुकासुर आदि का उद्धार करके मार्ग प्रशास्त किया। और जलशुद्धि के लिए यमुना जी में (प्रदूषण रूप जहर) कालीय नाग का दमन करके रक्षा की भगवान ने दावग्नि का पान किया और प्रलाम्बासुर का वध किया तथा ब्रजरज (मिटटी) का भक्षण किया। वृन्दा की उपयोगिता तो इस बात से ही लगा सकते है उसके पास सांप (नाग) नहीं आते और जहाँ तक उससे स्पर्शकर वायु प्रसार करती है वहाँ के दूषित जीवाणु नष्ट हो जाते है। द्वापर की भगवान श्रीकृष्ण की वृन्दा के विषय में उपयोगिता आजभी, कलि–काल में, सार गर्भित है। तुलसी के नीचे की मिटटी का भक्षण और शरीर पर मलने से अनावश्यक गर्मी से मुक्ति मिलती है। तुलसी औषधीय गुणो से ओत–प्रोत है। तुलसी की केवल पांच–सात पत्तियाँ पीसकर गाय की मिठी दही में मिलाकर भूखे पेट खाने से प्राय सभी रोगों का निधान सम्भव है।

वास्तव में इस पुस्तिका के संकलन का उद्देश्य भी यही है कि अधिक से अधिक तुलसी के पौधे लगाकर उनका संरक्षण किया जाए ताकि जन कल्याण हो सके। माता सीता और लक्ष्मण जी ने पर्णकुटि के बाहर तुलसी के पौधे लगाये थे। **(अयोध्या कांड)**

साभार :

इस पुस्तिका के संकलन में गीता प्रेस के विभिन्न अंको, विशेषकर आरोग्य अंग पत्रिकाओं, अनेक अयुर्वेदिक पत्रिकाओं, अन्य ग्रन्थों, लेखकों, वैद्यो, अनुभवी महानुभावों, सन्त–महात्माओं के विचारों विशेषकर अवधूत बाबा शिवानन्द जी, शक्तिपीठाधीश्वर स्वामी श्री गणेशानन्द जी महाराज, श्री स्वामी रामदेव जी मेरे गुरूदेव सन्त श्री आसाराम बापू के विचारों की सहायता ली है। मैं उनका और अन्य लेखकों, सम्पादकों आदि सभी का जिनसे सहायता ली है आभार मानता हूँ और उन सभी लेखकों के जिनके विचार संकलित है कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। विशेषकर डॉ. कु. सुमन सैनी, वैद्यराज श्री राकेश सिंह जी बक्शी, बापू श्री आसाराम जी के सद्शिष्य श्री सुरेशानन्द जी, वृन्दावन की डा. राकेश हरिप्रिया, डा. द्विवेदी आदि का भी आभार प्रकट करता हूँ। श्री राजेश गर्ग सम्पादक प्रतिबिम्ब, वरिष्ठ महामंडलेश्वर स्वामी श्री विदेह हरि जी महाराज, श्री राजपाल सिंह जी सिसौदिया का भी आभार व्यक्त करता हूँ।

क्षमा याचना : मैं सभी विद्वत जनों से भी क्षमा मांगता हूँ क्योंकि संकलन में धार्मिक, लौकिक, ऐतिहासिक आर्युर्वेद तथ्य न होकर अधिकतर जन श्रुति पर आधारित हैं। यदि कोई तथ्य गलत भी पाया जाएं तो कृपया उसे ठीक संदर्भ में रखकर मुझे क्षमा करें।

वास्तुदोष : घर में तुलसी का पौधा ईशान–कोण में लगाने से धनात्मक ऊर्जा, व्याप्त होती है वास्तुदोष की ऋणात्मक ऊर्जा का शमन करती रहती है। सकारात्मक (धनात्मक) ऊर्जा अदृश्य होती है। वैज्ञानिक हार्टमेण्ट अनसर्टने 'आवेएंटिना' नामक यन्त्र द्वारा इस ऊर्जा को मापा है तथा इसकी यूनिट बोविस मानी गई है। ऊँ की ऊर्जा 70 हजार बोविस, शालिग्राम (स्थापित) की ऊर्जा 1 लाख और स्वास्तिक की ऊर्जा 1 लाख बोविस मानी गई है। अब आप तुलसी की ऊर्जा के विषय में खुद ही अनुमान लगाये।

अनुरोध : सभी धार्मिक एवं समाजिक संस्थाओं से अनुरोध है कि वे प्रसाद रूप में तुलसी के पौधे वितरित करें और धर्म प्रेमियों को अधिकाधिक पौधे लगाने के लिय प्रोत्साहित करें।

कृतज्ञता : मैं अन्त में ब्रजरज प्राप्त ब्रह्मलीन श्री श्रीपाद बाबा जी महाराज, अपने गुरूदेव सन्त श्री आसाराम जी महाराज का कृतज्ञ हूँ जिन की प्रेरणा अपने साधकों को जन कल्याण के लिए सदैव प्रेरित करती रहती है–

आभारी
संकलनकर्ता
रतनमोहन गुप्ता
कृपा कुन्ज
सी–75, प्रशान्त विहार,
दिल्ली–110085

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, माकश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।

तुलसी

सौभाग्यं संततिदेहि धन धान्यंच मे सदा।
आरोग्य शोकशमनं कुरू में माधव प्रिये।।

सदा गेहे गेहे लसती सुतरां फुल्लकुसुमा.
परम् पूजास्थानं हृदयरस धारासुरसिता।
रुजों मृणां सर्वा परिहरति मा रक्षति भवात्
तुलाभावातुल्या न हि जगति यस्याश्च तुलसी।।

जो सर्वदा घर–घर में प्रफुल्लित हो शोभित होती है। जहाँ तुलसी होती है, वह स्थान श्रेष्ठ पूजा स्थान होता है। हृदयरस धारा से सुसिंचित है तथा मनुष्यों के सभी रोगों को दूर करती और भय से उनकी रक्षा करती है। उसके समान संसार में कोई अन्य न होने से वह तुलसी कहलाती है।

तुलसी दर्शन

प्रातरूत्थाय सुस्नातो यः पश्येन्तुलसी द्रुमम।
स सर्वतीर्थ सं सृष्टि फलमाप्रोत्य संशयम्।।
दिनं तच्च शुभं प्रोक्तं तुलसी यत्र दृश्यते।
न तत्र जायते तस्य विपत्तिः कुत्र चिन्मुने।।
प्रदक्षिणकृता येन तुलसी मुनिसत्तम।
कृता प्रदाक्षिणस्तेन, विष्णु साक्षान्न संशयः।।

अर्थात् : प्रातः उठकर स्नान करके जो व्यक्ति तुलसी द्रुम का दर्शन करता है उसे सभी तीर्थों के संसर्ग का फल निःसन्देह प्राप्त हो जाता है। वही दिन शुभ कहा गया है जिस दिन तुलसी के दर्शन हो और तुलसी के दर्शन करने वाले व्यक्ति को कहीं से भी विपत्ति नहीं आती। जिस व्यक्ति ने तुलसी की प्रदक्षिणा करली उसने साक्षात् भगवान विष्णु की प्रदक्षिणा करली, इसमें कोई संशय नहीं है। (श्रीमद् देवी पुराण–महाभागवत्, अ. 19 श. 7, 9, 13)

गौतमीय तन्त्र में आता है–

तुलसी दल मात्रेण जलस्य चुलुकेन वा।
वि क्री णी ते स्वामात्मानं भक्तेभ्यो भक्तवत्सलः।।

अर्थात्–भक्ति से दिये हुए एक चुल्लू भर जल तथा तुलसी पत्र द्वारा ही भगवान श्री हरि अपनी आत्मा को भक्तों को दे देते हैं।

माहात्म्य (नारद महादेव–सम्वाद)

श्री नारद जी बोले–महादेव परमेश्वर मैं तुलसी पत्र का परम माहात्म्य सुनना चाहता हूँ कृपया संक्षेप में मुझे उपदेश देने की कृपा करें।

श्री महादेव जी बोले–'महामते नारद! तुलसी का माहात्म्य संक्षेप में सुनिये जिसे सुनकर मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है। सब के रक्षक, विश्वात्मा, विश्वपालक भगवान पुरूषोत्तम ही तुलसी वृक्ष के रूप में प्रतिष्ठित है। दर्शन, स्पर्श, नाम संकीर्तन, धारण तथा प्रदान करने से भी तुलसी मनुष्यों के लिए सब पापों का सर्वदा नाश करती है। प्रातः उठकर स्नान करके जो व्यक्ति तुलसी का दर्शन करता है उसे सभी तीर्थो मे स्नान का फल निःसन्देह प्राप्त होता है। श्री पुरूषोत्तम क्षेत्र में भगवान गदाधर के दर्शन करने से जो पुण्य प्राप्त होता है वही तुलसी के दर्शन करने से प्राप्त होता है। हे मुने! वही दिन शुभ कहा गया है जिस दिन तुलसी का दर्शन होता है और तुलसी का दर्शन करने वाले व्यक्ति को कहीं भी विपत्ति नहीं आती। मुनि श्रेष्ठ जन्म–जन्मान्तरों का किया हुआ अत्यन्त निन्दित पाप भी तुलसी के दर्शन मात्र से नष्ट हो जाता है। पवित्र अथवा अपवित्र स्थिति में जो व्यक्ति तुलसी पत्र का स्पर्श कर लेता है वह सभी पापों से मुक्त होकर उस क्षण शुद्ध हो जाता है तथा अन्त में देवों के लिए दुर्लभ विष्णु पद को प्राप्त करता है। तुलसी का स्पर्श करना ही मुक्ति है और वही परमव्रत है। मुनि श्रेष्ठ जिस व्यक्ति ने तुलसी वृक्ष की प्रदक्षिणा करली उसने साक्षात भगवान विष्णु की प्रदक्षिणा करली इसमें कोई सन्देह नहीं है। जो मनुष्य

भक्तिपूर्वक तुलसी को प्रणाम करता है वह भगवान विष्णु के सायुज्य को प्राप्त करता है और पुनःपृथ्वी पर उसका जन्म नहीं होता। जहॉ तुलसी कानन है, वहाँ लक्ष्मी और सरस्वती के साथ साक्षात् भगवान जनार्दन प्रसन्नता पूर्वक विराजमान रहते है। जहॉ सर्व देवमय भगवान विष्णु रहते है वहीं रूद्राक्ष के सहित मैं तथा पितामह ब्रह्मा सावित्री के साथ रहते है। इसलिए वह उत्तम स्थान देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। उस तुलसी के स्थान में जो जाता है वह वैकुण्ठधाम को प्राप्त करता है। जो व्यक्ति स्नान करके उस पापनाशक क्षेत्र का मार्जन करता है वह भी पाप से मुक्त होकर स्वर्गलोक में जाता है। जो व्यक्ति तुलसी के मूल की मिही सललाट, कण्ठ, दोनों कानो, दोनों हाथ, स्तन मस्तक, पीठ, दोनों बगल, तथा नाभि पर उत्तम तिलक लगाता है उस पुण्यात्मा को श्रेष्ठ वैष्णव समझना चाहिए। जो तुलसी मंजरी से भगवान् विष्णु का पूजन करता है उसे भी सब पापों से रहित श्रेष्ठ वैष्णव कहा जाता है। जो व्यक्ति वैशाख कार्तिक और माघ मास मे प्रातः काल स्नान कर परमात्मा भगवान श्री हरि को विधि विधान से तुलसी पत्र अर्पित करता है उसका पुण्यफल अनन्त कहा गया है। दस हजार गाये दान करने तथा सैंकडो वाजपेय यज्ञ करने से जो फल प्राप्त होता है वही फल कार्तिक मास में तुलसी के पत्तों तथा तुलसी मन्जरी से भगवान विष्णु का पूजन करने से प्राप्त होता है। जो तुलसी कानन में भगवान विष्णु की पूजा करता है वह महाक्षेत्र (भगवती कामारव्या के शक्तिपीठ) में की गई पूजा का फल प्राप्त करते है।

बुद्धिमान व्यक्ति को तुलसी पत्र रहित कोई पुण्य

कार्य नहीं करना चाहिए। यदि कोई करता है तो उस कर्म का सम्पूर्ण फल उसे प्राप्त नहीं होता। तुलसी पत्र रहित संध्या–वन्दन कालातीत संध्या की तरह निष्फल हो जाता है। तुलसी कानन के मध्य में तृण अथवा वल्कल वृन्दों से भी भगवान विष्णु के मन्दिर का निर्माण कर जो उसमें भगवान विष्णु को स्थापित करता है तथा उनकी भक्ति में निरन्तर लगा रहता है वह विष्णु के साम्य को प्राप्त करता है और जो व्यक्ति तुलसी वृक्ष को भगवान विष्णु के रूप में समझकर तीन प्रकार (शरीर, मन और वाणी) से उन्हें प्रणाम करता है वह भी भगवान विष्णु के साम्य (सारुप्य मुक्ति) को प्राप्त करता है। सुरासुरजगत गुरो! देव देवेश! आपको नमस्कार है। अनघ! इस भयावह संसार से मेरी रक्षा कीजिये आपको नमस्कार है। महामते! जो व्यक्ति बुद्धि पूर्वक तीन बार अथवा सातवार प्रदक्षिणा करके संसार से उद्धार करने वाली भगवती तुलसी को इस मन्त्र से भक्ति पूर्वक प्रणाम करता है वह घोर संकट से मुक्त हो जाता है। तीनो लोकों के उद्धार में तत्पर शिवे! जिस तरह साक्षात गंगा सभी नदियों में श्रेष्ठ है उसी तरह लोकों को पवित्र करने के लिए वृक्षों में साक्षात् तुलसी स्वरूपिणी (आप) श्रेष्ठ है! तुलसी! आप ब्रह्मा, विष्णु आदि प्रमुख देवताओं के द्वारा पूर्व में पूजित हुई है आप विश्व को पवित्र करने हेतु पृथ्वी पर उत्पन्न हुई है। विश्व की एकमात्र वन्दनीया आपको मै नमस्कार करता हूँ। आप प्रसन्न हों।

मुनि श्रेष्ठ इस प्रकार जो व्यक्ति तुलसी को प्रतिदिन प्रणाम करता है वह जहॉ कही भी स्थित है, भगवती तुलसी उसकी सभी कामनाओं को पूर्ण करती है। भगवती तुलसी सभी

देवताओं की परम प्रसन्नता को बढ़ाने वाली है।

जहाँ तुलसी वन होता है वहाँ देवताओं का वास होता है और पितृगण परम प्रीतिपूर्वक तुलसी वन में निवास करते है। पितृ देवार्चन आदि कार्यो में तुलसी पत्र अवश्य प्रदान करना चाहिए। इस कार्यो में तुलसी पत्र न देने पर मनुष्य उस कर्म का सम्यक फल प्राप्त नहीं करते। महामते। लोक मुक्तिदा भगवती तुलसी को त्रिलोकीनाथ भगवान विष्णु सभी देवी–देवताओं और विशेषरूप से पितृगणों के लिए परम प्रसन्नता देने वाली समझना चाहिए। इसलिये देव तथा पितृ कार्यो में तुलसी पत्र अवश्य समर्पित करना चाहिये। जहाँ तुलसी वृक्ष स्थित है वहाँ सभी तीर्थो के साथ साक्षात् भगवती गंगा सदा निवास करती है। मुनि श्रेष्ठ इसलिये तुलसी वृक्ष के निकट देह त्याग करने वाले मनुष्य को वही फल प्राप्त होता है जो गंगा में देह त्याग करने का होता है।

मुनि श्रेष्ठ! इस प्रकार मैने तुलसी का माहात्म्य संक्षेप में आपसे कहा। जो मनुष्य इस माहात्म्य को सुनता है, वह भी स्वर्गलोक को प्राप्त करता है।

भगवती तुलसीने भगवान् नारायणको पतिरूपमें प्राप्ति के लिये बदीवनमें अत्यन्त कठोर तपस्या की।

महारानी तुलसी
(अवतरण–कथा)

भारत एक तपोवन है यहाँ वृक्षों को बहुत महत्त्व दिया जाता है। पीपल को तो साक्षात् ईश्वर का स्वरूप ही कहा जाता है। अश्वत्थः सर्व वृक्षाणां–(श्रीमद् भगवत गीता अ.10/26) तुलसी को लक्ष्मी का साक्षात् रूप माना जाता है, लोक गीतों में भगवान की पटरानी कहा गया है।

तुलसी महारानी नमो नमो।
हरि की पटरानी नमो नमो।।

वैज्ञानिक दृष्टि से सभी वृक्ष दिन में आक्सीजन छोडते है और रात में कार्बनडाईआक्साइड छोडते है। किन्तु पीपल वृक्ष रात–दिन आक्सीजन ही छोडता है और वातावरण को शुद्ध करता है। उसी प्रकार तुलसी का पौधा भी कीटाणु नाशक वायु से वातावरण को शुद्ध करता है।

प्रलय के पश्चात् सृष्टि के समय परब्रह्म परमात्मा दो रूपों में प्रकट होते है प्रकृति और पुरूष।

भगवती तुलसी प्रकृति देवी का प्रधान अंश माना जाता है इसलिये इसे "कल्प–वृक्ष" की संज्ञा दी जाती है और इसे पूज्या हरिप्रिया, माधव प्रिया, विष्णु प्रिया, वृन्दा, सुलभा, सुखवल्लमा आदि नामों से विभूषित किया जाता है और मोक्ष प्रदान होने के कारण इसे मोक्ष प्रदा भी कहते है। वैदिक मन्त्रों में तो तुलसी के पत्रों को सोने के समान और मंजरी को रत्नों के समान संज्ञा दी जाती है।

तुलसी हेमरूपांच, रत्न रूपांच मन्जरी।

महारानी तुलसी का अवतरण गोलोकधाम से मृत्युलोक में संसार के प्राणियों के कल्याण के लिये ही हुआ हैं इस के **अवतरण की कथा** ब्रह्म वैवर्तपुराण शिवपुराण, श्रीमद् देवी भागवत पुराण आदि ग्रंथो में मिलती है। इस की दिव्य लीला संक्षेप में इस प्रकार है।

भगवान कृष्ण के गोलोक धाम मं महारानी तुलसी नामक गोपी थी और श्रीकृष्ण महाराज की प्रेयसी व सखी थी। जब वह महारास में प्रभु के साथ रत थी तो राधारानी वहॉ पहुॅच गई और उसने (राधा जी ने) क्रोध में आकर उसे शाप दिया कि मृत्युलोक में मानव योनि में जन्म लो मृत्युलोक में भारतवर्ष मे कुछ काल बीतने के बाद राजा धर्मध्वज की पुत्री के रूप में तुलसी ने जन्म लिया। यहॉ भी इस का नाम तुलसी ही पडा। उधर श्रीकृष्ण के प्रधान पार्षदों में एक सुदामा नाम का गोप था। एक दिन उसे भी श्री राधारानी ने दानव योनि में उत्पन्न होने का शाप दे दिया था। क्योंकि गोप से राधारानी की सखियों का तिरष्कार हो गया था। इस गोप का भी भारत में दैत्यकुल में जन्म हुआ। श्रीकृष्ण की कृपा से उसे पूर्व जन्म की स्मृति थी और उसका नाम शंखचूड रखा गया। तदनन्तर जब शंखचूड बड़ा हुआ तब वह जैगीषव्य मुनि के उपदेश से पुष्कर में जाकर ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिये तपस्या करने लगा। तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी वहॉ पधारे और वर मांगने को कहा। शंखचूड ने देवताओं के लिए अजेय हो जाऊ वर मांगा। ब्रह्मा जी ने तथास्तु कहा और शंखचूड को श्रीकृष्ण कवच प्रदान किया जो सम्पूर्ण मंगलो का भी मंगल और सर्वत्र विजय प्रदान करने वाला है

शंखचूड का तुलसी जी से विवाह निवेदन

ब्रह्मा जी ने उसे वदरी वन जाकर धर्म ध्वज की पुत्री तुलसी से विवाह करने को कहा। पुष्कर में ही उसने कवच को गले में बांध लिया और वदरिका आश्रम की ओर शंखचूड चल दिया।

उधर भगवती तुलसी भी श्री नारायण को पतिरूप में प्राप्त करने के लिए वदरीवन में अत्यन्त कठोर तपस्या कर रही थी। तुलसी की घोर तपस्या को देखकर ब्रह्मा जी ने उसे वर देते हुए कहा तुलसी सुदामा नाम का गोप जो श्रीकृष्ण का प्रधान पार्षद था वह भी राधाजी के शाप के कारण दैत्यकुल में शंखचूड नाम से उत्पन्न हुआ है। वह इस जन्म में (वह श्रीकृष्ण अंश) तुम्हारा पति होगा उस के बाद श्री नारायण तुम्हें पतिरूप में मिलेंगे यही बाते ब्रह्मा जी ने शंखचूड से कही थी और ब्रह्मा जी ने उन दोनों का गन्धर्व विवाह करा दिया।

दानवराज दम्भ का पुत्र शंखचूड गान्धर्व विधि से तुलसी का पाणिग्रहण करके घर लोटे तो सब दानव और दैत्यों को बहुत प्रसन्नता हुई और सब अपने गुरू शुक्राचार्य के पास गये। दम्भ कुमार शंखचूड ने भी अपने गुरू को साष्टांग प्रणाम किया। फिर सर्व सम्मति से गुरूजी ने शंखचूड को दानवों और दैत्यों का अधिपति बना दिया।

शंखचूड ने ब्रह्माजी से 'अजेय' का वरदान प्राप्त कर लिया था और ब्रह्मा जी ने दिव्य श्रीकृष्ण कवच जो सर्वत्र विजय प्राप्त करने वाला उसे दिया हुआ था। उधर उसकी पत्नी सती तुलसी के तप के प्रभाव से शंखचूड सुरक्षित थे

अतः अजय शंखचूड ने अधिपति बनने के उपरान्त सहसा देवताओं पर आक्रमण कर दिया और देवताओं को पराजित कर तीनों लोकों के राज्य पर अधिकार कर लिया और इन्द्र बन गये और अपनी शक्ति से कुबेर, सोम, सूर्य, अग्नि, यम और वायु आदि के अधिकारों का भी पालन करने लगा।

समर भूमि से भागकर देवता ब्रह्माजी की शरण में गये क्योंकि अधिकार जाने के कारण देवताओं की स्थिति भिक्षुओं जैसे हो गई। ब्रह्माजी के पास जाकर अत्यन्त विलाप करने लगे।

ब्रह्मा जी देवताओं को लेकर शंकर जी के पास गये और शंकर जी उनकी करूण कहानी सुनकर बैंकुठ में श्रीहरि के पास गये और वहॉ पहुॅचकर श्रीहरि को सम्पूर्ण स्थिति से अवगत कराया। भगवान ने शंखचूड के पूर्व जन्म का रहस्योदघाटन किया। उन्होंने बतलाया कि शंखचूड पूर्व जन्म में सुदामा नामक गोप था और वह उनका (श्रीहरि का) प्रधान पार्षद था तथा राधाजी की सखियों के अपराध के कारण वह राधिका जी के शाप का पात्र बना और दानव योनि को प्राप्त हुआ है और उसे पूर्व जन्म की स्मृति भी है। उसने तपस्या से ब्रह्मा जी से अजय होने का वरदान प्राप्त है उसके गले में 'सर्व मंगल नामक' कवच है जिसके प्रभाव से वह त्रैलोक्य विजयी है। तुलसी भी पूर्व जन्म में गोलोक में तुलसी नामक गोपी थी और राधा जी के शाप से तुलसी नाम से ही मृत्युलोक मे राजा धर्मध्वज की पुत्री के रूप में भारत में अवतरित हुई है। तुलसी गोलोक में श्रीहरि की नित्यप्रिया थी वह परम पतिव्रता है अतः पतिव्रता के प्रभाव से शंखूचड को कोई मार नहीं सकता। जब तक तुलसी का

पातिव्रत खंडित नहीं होता और शंखचूड के गले का कृष्ण कवच दूर नहीं होगा, शंखचूड मारा नहीं जा सकता। तदनन्तर यह निर्णय लिया गया कि ब्राह्मण के वेश में श्री हरि शंखचूड से कवच मांग लेंगे और वह (श्री हरि) अपनी नित्यप्रिया तुलसी का लौकिक सतीत्व को भंग करें तथा भगवान शंकर श्री हरि के त्रिशूल के प्रहार से उसका (शंखचूड) का वध करेंगे। इसके बाद वह दोनों गोपी और गोप मृत्युलोक में राधाजी के शाप से मुक्त होकर वैंकुठधाम में निवास करेंगे।

श्रीहरि का ब्राह्मण वेश में शंखचूड से कृष्णकवच लेना

श्री हरि ने अपने वचन के अनुसार ब्राह्मण का वेश धारण कर शंखचूड से 'सर्व मंगलकारी' 'कृष्ण–कवच' मांग लिया और शंखचूड का स्वरूप धारणकर तुलसी से हास–विलास किया जिससे उसका सतीत्व भंग हो गया। उधर श्री शंकर ने ब्रह्मा सहित सब देवताओं के साथ मिलकर आक्रमण कर दिया और श्री हरि के दिये हुये त्रिशूल से प्रहार कर शंखचूड का वध कर दिया।

इधर जब तुलसी को श्री विष्णु द्वारा सतीत्व भंग होने का और शंखचूड के निधन का पता लगा तो सति तुलसी ने श्री विष्णु को शाप दिया और कहा– शंखचूड आपका भक्त था आपने भक्त को मरवा डाला। आप बडे पत्थर–दिल है (पाषाण–हृदय) हो अतः 'पाषाण हो जाओ'। श्री विष्णु ने तुलसी के शाप को स्वीकार कर लिया और कहाकि देवी।

शंखचूड मेरे नित्यधाम गोलोकधाम (वैंकुण्ठ) में गया है और तुम भी यह शरीर त्याग कर राधाजी के शाप से मुक्ति प्राप्त कर मेरे गोलोकधाम में प्रस्थान करो। तुम्हारा (तुलसी) का यह शरीर नदी रूप में परिणत होकर गण्डकी नाम से प्रसिद्ध होगा और मै तुम्हारे शाप को सत्य करने के लिए पाषाण (शालग्राम) बनकर तुम्हारे (गण्डकी नदी के) तट पर ही वास करूंगा। यह (गण्डकी) अति पुण्यमयी नदी होगी और शालग्राम स्वरूप के जल का पान करने वाले पापों से मुक्त होकर मेरे लोक में जाऐगे। हे देवी! तुम्हारे केशकलाप तुलसी नामक पवित्र (पौध) रूप में होंगे और त्रैलोक्य में देव पूजा के काम आने वाले पत्र पुष्प आदि उन सब में प्रधान होगें।

इस प्रकार श्री हरि ने भक्तों के कल्याण के लिये पाषाण–शालग्राम और उनकी नित्यप्रिया तुलसी ने तुलसी के रूप में भारत में अवतार धारण किया। इसलिये तुलसी का आध्यात्मिक महत्त्व भी है। जिस प्रकार शालग्राम के जलपान करने से पाप से मुक्ति मिलती है उसी प्रकार तुलसी के पत्रों से टपकते पानी को सिर पर धारण करने से गंगा स्नान और दस गोदान का फल प्राप्त होता है तुलसी के मूल की मिटटी जिस अंग में लगी होगी उसे यमराज देखने में सफल नहीं होंगे।

धार्मिक महत्त्व

श्री हरि के संसर्ग के कारण तुलसी का धार्मिक महत्व बहुत है। तुलसी के बिना नारायण की कोई पूजा पूरी नहीं होती। नैवेद्य आदि के अर्पण के समय मन्त्रोच्चारण और घंटानाद के साथ तुलसी दल अर्पण करना उपासना का मुख्य अंग मना जाता है। तुलसी मंजरी से नारायण का पूजन करने वाले निःसन्देह मुक्ति पाते है। जो लोग तुलसी काष्ट का चन्दन धारण करते है अर्थात तुलसी की माला पहनते है उन के शरीर को पाप से मुक्ति मिलती है।

जहाँ तुलसी का वन है वहा श्री हरि ब्रह्मा और लक्ष्मी सब देवताओं के साथ विराजमान होते है यही कारण है कि मन्त्र जाप तुलसी वन में करने से सौ गुणा फल मिलता है। तुलसी का पौधा रोपकर उसकी विधिवत पूजा करनी चाहिए। भूत, विशाच, दैत्य आदि तुलसी वृक्ष से दूर भागते है। खोटे विचार से उत्पन्न होने वाले पाप, रोग, तुलसी पौधे के निकट आने से नष्ट हो जाते है। जिस ने पूजा के लिए तुलसी का बगीचा लगा रखा है उसने सौ यज्ञो का अनुष्ठान पूरा कर लिया। भारतीय संस्कृति में तुलसी हर हिन्दु के घर आंगन की शोभा है। पूजा और यज्ञ आदि कार्यो में तुलसी का एक दल भी पुण्य प्रदान करने वाला है। स्कन्द पुराण और पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में आता है कि जिस घर तुलसी का पौधा होता है वह घर तीर्थ के समान है। चन्द्रग्रहण अथवा

सूर्य ग्रहण आने पर दुर्वा अथवा तुलसी दल खाद्यसामग्री के ऊपर ढककर रखते है जिससे ग्रहण की किरणे खादसामग्री पर दुष्प्रभाव न डाल सके। कलियुग में तुलसीका पूजन कीर्तन ध्यान रोपण और धारण करने से वे पापको जला देती है तथा स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त कर, मोक्ष प्रदान करती है। तुलसी दल के द्वारा प्रतिदिन विष्णु पूजा करके मनुष्य अपनी सैंकडो और हजारों पीढियों को पवित्र कर सकता है। मनुष्य यदि तुलसी पूजन आदि का दूसरों को उपदेश देता है और स्वयं भी आचरण करता है वह वैंकुण्ठ को प्राप्त होता है तुलसी की सेवा गुरू, ब्रह्मा देव आदि की पूजा ही है। तुलसी का नामोच्चारण करने पर श्री विष्णु प्रसन्न रहते है और दर्शन मात्र से गोदान का फल प्राप्त होता है। तुलसी धर्म की सीमा में ही सीमित नहीं वरन धर्म निपेक्ष भी हैं। क्षेत्र सीमा से परे है।

तुलसी की पूजा भारत में ही नहीं अपितु विश्व के अन्य देशों में भी की जाती है (सुन्दर काण्ड) मे हनुमान जी ने लंका मे माता सीता का पता तुलसी के पौधे को देखकर भक्त विभीषण के घर से लगा नव तुलसी का वृंद तहं देखिहरष कपिराई (दोहा५) और लंका में आग लगाने पर विभीषण का घर इसलिये आग लगने से बच गया क्योंकि वहॉ तुलसी के पौधे थे। (जरा नगर निमिष एक माहीं, एक विभीषण का गृह नाही। उलटि पलटि लंका सब जारी) (चौपाई २५)

ग्रीस में इस्टर्न चर्च नामक संम्प्रदाय में तुलसी की पूजा होती है और सेंट वेजिल जयन्ती के दिन **'नूतन वर्ष भाग्यशाली' हा** इस भावना से स्त्रियॉ देवल मे चढाया गया तुलसी दल को प्रसाद रूप में घर ले जाती है। भारत में भी तुलसी दल को पूजा के बाद मस्तक पर धारण किया जाता है। भोजन को प्रसाद रूप में ग्रहण करने से पूर्व तुलसी दल हर वयंजन में रखते हैं।

अंतिम समय तुलसी दल / तुलसी दल युक्त गंगाजल

मरणासन व्यक्ति के मुह में डाला जाता है जिससे मरणासन व्यक्ति को सद्गति प्राप्त हो सके। दाह संस्कार के समय तुलसी के कष्ट का उपयोग किया जाता है जिससे अनन्त पापों से मुक्ति मिल जाती है। तुलसी की माला को सिद्ध माला माना जाता है। इसी प्रकार तुलसी मज्जरी का भी विशेष महत्व है। तुलसी का पूजन वैसे तो वर्ष भर किया जाता है पर कार्तिक मास में विशेष फल दाई होता है। कार्तिक में गंगा स्नान के बाद तुलसी विवाह की परम्परा है यह परम्परा श्रीमद् भागवत महापुराण के परायण के समय भी की जाती है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण (प्रकृ0 22/33–34) मे बतलाया गया है कि तुलसी महारानी की पूजा के उपरान्त निम्न नामाप्टक का पाठ करने से अश्वमेघ यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है।–

"वृन्दा वृन्दावनी विश्व पूजिता विश्व पावनी।
पुष्प सारा नन्दिनी च तुलसी कृष्ण जीवनी।

एतन्नामाष्टकं चैव स्तोत्रं नमार्थसंयुतम्।
यः पठेन्तां च सम्पूज्य सोश्वमेघफलं लभेत।।

तुलसी! तुम अमृत से उत्पन्न हो और कृष्ण को सदा प्रिय हो। मै भगवान की पूजा के लिए तुम्हारे पत्तों को चुनता हूँ। तुम मेरे लिये वरदायिनी बनो। तुम्हारे अंगो से उत्पन्न होने वाले पत्रो और मंजरियों द्वारा मै सदा ही श्री हरि का पूजन कर सकूँ वैसा उपाय करो। तुम कलिमल का नाश करने वाली हों। इस भाव के मन्त्रों से तुलसी दल चुनकर जो श्रीकृष्ण की पूजा करता है उस की पूजा अनन्तगुणा फल देती है और उसे अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है।

तुलसीं ये विचिन्वन्ति धन्यास्ते कर पल्लवाः। (स्कन्दपुराण)
अर्थात् : जो हाथ पूजा के लिए तुलसी–दल चुनते है, वे धन्य है।

तुलसी की पत्तियाँ मंजरी के आस–पास की तोडनी चाहिये। पूर्णिमा, अमावस्या, रविवार, संध्या समय, रात्रि दिन के 12 बजे नहीं तोडनी चाहिये।

पूजा–पद्धति

(धार्मिक पक्ष)

सौभाग्यंदेहि में, सदा माधव प्रिये।

बहुदा सनातन धर्मावलम्बी तुलसी को साक्षात् देवी रूप मे पूजते है। त्रेतायुग में लंका में विभीषण के घर में तुलसी के अनेक पौधे लगे हुए थे। तुलसी दानवराज, दम्भ के पुत्र महा प्रतापी राजाधिराज शंखचूड की महा तपस्वीणी पत्नी थी इसलिये तुलसी की मान्यता दानव राज भी करते थे क्योंकि देवता दानव, असुर, गन्धर्व, किन्नर, राक्षस सभी शंखचूड के वशवर्ती थे। वैष्णव सम्प्रदाय में तुलसी को लक्ष्मी का स्वरूप माना गया है। भगवान को तुलसीदल अर्पण करने से सर्वाधिक प्रसन्नता होती है। अतः हिन्दु धर्म–संस्कृति के अनुसार प्रत्येक हिन्दु के घर–आंगन में तुलसी का पौधा होता है। महिलाऐ स्नान के उपरान्त तुलसी के पौधे की पूजा करती है। दीप जलाती है और परिक्रमा करती है। तुलसी का पूजन वैसे तो वर्षभर किया जाता है पर विशेष रूप में कार्तिक में पूजा का विशेष महत्व है। कहते है– सुहाग की रक्षा के लिये तुलसी पूजा की जाती है। माँ अनुसूइया ने माता सीता को तुलसी के पातिव्रत धर्म की शिक्षा दी। **(अरण्य कांड)**

वृन्दाम् दृष्टवा नमस्कृत कुर्बन चैव प्रदाक्षिणा।
प्रदाक्षिणां कृत्वं तेन सप्तद्वीप–वसुन्धरा।।

तुलसी (वृन्दा) को देखकर नमस्कार करे और परिक्रमा करें। परिक्रमा करने से पृथ्वी पर सातोद्वीपों के सभी तीर्थो का फल मिल जाता है।

तुलसी के एक एक पत्ते का दर्शन पुण्य देने वाला होता है

तो फिर उस के उपयोग का तो कहना ही क्या?

तुलसी के पौधे के पास विषधारी—सर्प नहीं आता। इसकी पत्तियों की सनसनाहट से भूत—प्रेत आदि दूर भाग जाते है। इसकी वायु से मलेरियां के कीटाणु नष्ट जो जाते है। जब आदमी भूतोन्माद से पीड़ित होकर जोर—जोर से चिल्ला रहा हो तो तुलसी के पत्ते का जल अथवा जल में तुलसी के पत्ते डालकर रोगी के चारों ओर 11 बार परिक्रमा करते हुए उस जल को छिडकते हुए 'ओ३म्' मन्त्र का जाप करते जाए और अन्त में वह तुलसीदल खिलादे और कहे ठीक हो जावो। तुरन्त लाभ होगा। तुलसी जल में स्नान करने से पापों से मुक्ति और आनन्द की अनूभूति होती हैं तुलसी जल का पानी पीने से कई प्रकार के रोगों से निवृति व चित्त शांत होता हैं पितरों की तृप्ति के लिये तुलसी वन में श्राद्ध करने से पितरों का मूक आशीर्वाद प्राप्त होता हैं। पितरों के निमित तुलसी पौध लगाने से तुलसी के जड के (मूल) विस्तार के अनुरूप युगों तक ब्रह्मलोक में वास मिलता है। तुलसी के पौधे के नीचे गाय के घी का दीप जलाने से प्राणवायु (ऑक्सीजन) बनती है (यह वैज्ञानिकों के लिय शोध ा का विषय है क्योंकि जलने में ऑक्सीजन का ह्रास होता है।) स्त्रिया पौधे को देवी का साक्षात् मूर्ति मानकर साडी वगैरा पहनाती है उसका श्रृंगार करती है। तुलसी मे भगवान हरि का संसर्ग होने के कारण और वैंकुण्ठ वासी होने के कारण साक्षात् 'देव' अथवा 'देवी' और तप के प्रभाव से 'सती' की परिकल्पना करती है। इसकी शुक्ष्म और कारण शक्ति अद्वितीय है। यह आत्मोन्नति का पथ प्रशस्त करती है तथा गुणों की दृष्टि से संजीवनी बूटी ही है। घर—घर में तुलसी लगाने, पूजा करने के पीछे संभवत् यही कारण है कि यह सर्व रोग निवारक, वातावर्ण में पवित्रता, प्रदूषण का शमन, आत्मबल को वलवती, करने आदि में सक्षम है। जिस घर में लहलहाता तुलसी का पौधा होता है उस पर आकाश की बिजली नहीं गिरती।

तुलसी की कहानी
(लोक कथाओं में)

कार्तिक के महीने में महिलाये स्नान के उपरान्त तुलसी को सीचने जाती है। सब कोई तो तुलसी रानी को सींचकर अर्थात् जलाभिषेक के बाद घर आजाती, पर एक बुढ़िया माई वही रूककर तुलसी से बाते करती और कहती माता तू सत् की दाता, मै बिड़ला सींचू तेरा, तूकर निस्तारा मेरा। तुलसी माता अडुवा दे, लडडुवा दे। पीले रंग की धोती दे, मीठा मीठा ग्रास दे, वैंकुण्ठ का वास दे, चटके की चाल दे पटके की मौत दे, चन्दन का काठ दे, झालर की झंकार दे, साई का राज दे, दाल–भात का जीमन दे ग्यारस का दिन दे और कान्हाजी का कांधा दे। इतना सुनकर तुलसी माता सूखने लगी। भगवान ने पूछा की तुम्हारे पास तो इतनी स्त्रियाँ आती है तुम्हें खिलावें, पिलावे फिर भी तुम क्यो सुखने लगी। तुलसा माता ने बतलाया कि बुढ़िया माई आती है जो इतनी बात कहकर जाती है। मै और तो सबकुछ दे दूंगी पर कान्हा (कृष्ण) का कांधा कहा से दूंगी। थोडे दिन बाद बुढिया की मृत्यु हो गइ। सब कोई उसको उठाने लगे पर

वह इतनी भारी होगई कि उठी ही नहीं। सब कोई उसे पापिन कहने लगे। भगवान बूढ़े ब्राह्मण का रूप लेकर आये और सबसे पूछा की इतनी भीड़ क्यों हो रही है। सब ने कहा कि एक बुढ़िया मर गई है। पापनी थी भारी लोहे की हो गई है। किसी से भी उठती नहीं। तब उस ब्राह्मण ने कहा कि कान में उसके मुझे कुछ बात कहने दो, तो यह हलकी होकर उठ जायेगी। सब ने कहा कि बाबा तू भी अपने मन की निकाल ले। फिर उस ब्राह्मणरूपी भगवान ने उसके कान में कहा–

तू बिडला सींचे मेरा, मै करू निस्तारा तेरा।
वैंकुण्ठ का वास ले, चटके की चाल ले,

पटके की मौत ले, चन्दन का काठ ले,
झालर की झंकार ले, साई का राज ले

ग्यारस का दिन ले और
कान्हा का कांधा ले।।

इतना सुनते ही बुढ़िया माई हलकी हो गई ब्राह्मणरूप में भगवान कंधे पर ले गये और उसकी मुक्ति हो गई। हे तुलसी माता जैसी बुढ़िया की सुनी वैसे सब की सुनना और कल्याण करना।

तुलसी–महिमा (कथा)

प्राचीन काल में हरिमेधा और सुमेधा नामक दो ब्राह्मण थे। वह जाते–जाते किसी दुर्गम वन में परिश्रम से व्याकुल हो गए, वहाँ उन्होंने एक स्थान पर तुलसी दल देखा। सुमेधा ने तुलसी का महान् वन देखकर उसकी परिक्रमा की और भक्ति पूर्वक प्रणाम किया। यह देख हरिमेधा ने पूछा कि तुमने अन्य सभी देवताओं व तीर्थों–व्रतों के रहते तुलसी वन को प्रणाम क्यों किया? तो सुमेध ा ने बताया कि प्राचीनकाल में जब दुर्वासा के शाप से इन्द्र का ऐश्वर्य छिन गया तब देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मन्थन किया तो धन्वतिर रूप भगवान् श्री हरि और दिव्य औषधि ायाँ प्रकट हुईं। उन दिव्य औषाधियों में तुलसी भी थी। जिसे ब्रह्मा आदि देवताओं ने श्री हरि को समर्पित किया और भगवान् ने उसे ग्रहण कर लिया। भगवान् नारायण संसार के रक्षक और तुलसी उनकी प्रियतमा है इसलिए मैने उन्हें प्रणाम किया है।

सुमेधा इस प्रकार कह ही रहे थे कि सूर्य के समान अत्यन्त तेजस्वी विशाल विमान उनके निकट उतरा। उन दोनों के समक्ष ही वहाँ एक बरगद का वृक्ष गिर पड़ा और उसमें से दो दिव्य पुरूष प्रकट हुए। उन दोनों ने हरिमेधा और सुमेधा को प्रणाम किया। तब दोनों ब्राह्मणों ने उनसे पूछा कि आप कौन हैं? तब उनमें से जो बड़ा था वह बोला, मेरा नाम आस्तिक है। एक दिन मैं नन्दन वन में पर्वत कर क्रीडा करने गयो था तो देवांगनाओं ने मेरे साथ इच्छानुसार विहार किया। उस समय उन युवतियों के हार के मोती टूटकर तपस्या करते हुए लोमेश ऋषि पर गिर पड़े। यह देखकर मुनि को क्रोध आया। उन्होंने सोचा कि स्त्रियाँ तो परतन्त्र होती हैं अतः यह उनका अपराध नहीं, दुराचारी आस्तिक ही शाप के योग्य है। ऐसा सोचकर उन्होंने मुझे शापित किया–"अरे तू ब्रह्म राक्षस होकर बरगद के पेड पर निवास कर।" जब मैंने विनती से उन्हें प्रसन्न किया तो उन्होंने शाप से मुक्ति की विधि सुनिश्चित कर दी कि जब तू किसी ब्राह्मण के मुख से तुलसी दल की महिमा सुनेगा तो तत्काल तुझे उत्तम मोक्ष प्राप्त होगा। इस प्रकार मुक्ति का शाप पाकर मैं चिरकाल से इस वट वृक्ष पर निवास करता था। आज दैववश आपके दर्शन से मेरा छुटकारा हुआ है। तुलसी पूजा पाप और शाप का क्षयकर मुक्ति प्रदान करने वाली है।

तुलसी–भार

एक प्रसिद्ध कथा है। एक बार एक यज्ञ में नारद् जी ने सत्यभामा से दान स्वरूप भगवान श्रीकृष्ण को ही मांग लिया। बड़ी दुविधा पैदा हो गई, क्योंकि सत्यभामा के अतिरिक्त भगवान कृष्ण की अन्य भी पटरानियां थी। रानी के प्राण तो संकट में आ गए। बहुत सोच–विचार के बाद एक बीच का रास्ता निकाला गया। यह वह कि भगवान के स्थान पर सत्यभामा उनके तुल्य स्वर्ण ही दान में दे दें। अब एक पलडे में प्रभु जा बैठे! दूसरे में रखा जाने लगा–स्वर्ण। लेकिन यह क्या? पलड़े में स्वर्ण का एक ऊँचा पहाड़ खड़ा हो गया, पर प्रभु वाला पलड़ा टस से मस नहीं हुआ। ज्यों का त्यों धरती से लगा रहा। अब जब सब प्रयास विफल हुए तो प्रभु श्रीकृष्ण की दूसरी रानी रूक्मणी ने तुलसी सुमिरन का आसरा लिया। एक तुलसी पत्र उठाया और स्वर्ण की जगह पलड़े में रख दिया। बस उसी क्षण घटा चमत्कार! दोनों पलड़े बराबर स्थिति में आ गए। स्पष्ट है कि प्रभु के समान तुलसी का भार।
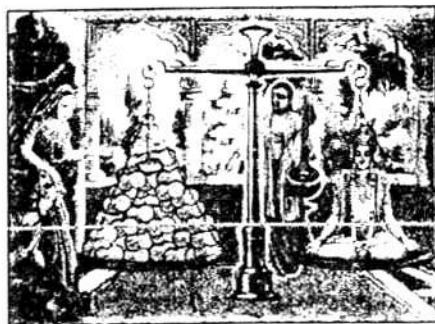
प्रेम भार यह कैसा, अद्भुत ये नाता।
एक ही दल से तुमरे तुला त्रिभुवन दाता।।

हनुमान जी की क्षुधा–शान्त

रामायण की एक सर्व विदित दन्त कथा प्रसिद्ध है कि रामजी के राज्यभिषेक के उपरान्त एक वार माता सीता ने हनुमान की सेवा से प्रसन्न होकर उन्हें भोजन पर निमन्त्रित किया कि माता सीता भोजन अपने हाथों से बनाकर हनुमान को करायेगी।

माता सीता जी भोजन परोस रही थी और हनुमानजी भोजन कर रहे थे। भोजन कराते–कराते माता सीता जी थक गई और भंडार की सभी सामग्री भी समाप्त हो गई किन्तु हनुमान जी की क्षुधा शान्त होने को नहीं आरही थी और भूख बहुत बढ़ती जा रही थी। विकट समस्या हो गई राम राज्य में राज–भवन की खाद्य सामग्री समाप्त और अतिथि भूखा का भूखा। सीताजी निराश और हतास होकर रामजी के पास पहुँची और समस्त वृतान्त से रामजी को अवगत कराया। रामजी भी दुविधा में पड़ गये। पुनः विचार कर रामजी ने तुरन्त एक तुलसी–दल भगवान के चरणों में से उठाकर सीताजी को दिया और सीताजी ने वही तुलसी दल हनुमानजी को भोजन की थाली में परोस दिया। तुलसी दल पाते ही हनुमान जी की क्षुधा–शान्त हो गई।

फिर हनुमानजी ने बतलाया कि जिस तुलसी दल से भगवान की क्षुधा–शान्त हो जाती है फिर भगवान भक्त की क्षुधा कैसे रह सकती है।

सीता माँ की आन बचाई, तू ने हनुमत भूख मिटाई।
वृन्दा तू है बडी महान, बनाती सब के बिगड़े काम।।

तुलसी का विवाह

कार्तिक स्नान करने वाली स्त्रियां शुक्ल पक्ष की एकादशी को तुलसी जी व शालग्राम का विवाह बड़ी धूम-धाम, नगाड़ों, गाजों-बाजों के साथ सदा सौभाग्यशाली होने के लिये पूर्ण विधि-विधान से कराती है। निःसंतान स्त्रियां सन्तान प्राप्ति के लिये रचवाती है ताकि सन्तान सुख से लौकिक पूर्णता प्राप्त हो सके।

कई स्थानों में ऐसी परम्परा है कि तुलसी के गमले को गेरू आदि से सजाकर उसके चारों ओर ईख का मण्डप बनाकर उसके उपर ओढनी या चुनरी जो सुहाग की प्रतीक है औढाते है। गमले को साडी में लपेट कर तुलसी को लाल रंग की चुड़ियॉं पहनाकर, श्रृंगार करते हैं। ब्राह्मणों द्वारा तुलसी जी की षोडशोपचार **"तुलस्यै नमः"** नाम मन्त्रसे पूजा कराते है। एक नारियल दक्षिणा सहित टीके के रूप में रखते है। देवताओं की और शालग्राम की विधि-विधान से पूजा कराई जाती है। शालग्राम की मूर्ति की चौकी हाथ में लेकर तुलसी की सात परिक्रमा कराई जाती है। श्रद्धा पूर्वक सभी नेकचार पूर्ण किये जाते है। सुन्दर-सुन्दर वस्त्र, आभूषण, सुहाग पिटारी, अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार दान दी जाती है और ब्राह्मणों को मिष्ठान युक्त भोजन कराकर आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है। लोकिक गीत और भजन गाए जाते है राजस्थान में तुलसी विवाह को बटुऑ-फिराना कहते हैं। विवाह से कन्या दान का फल मिलता है। वैधव्य दोष दूर होता है।

(विवाह केवल लौकिक ही नही आध्यात्मिक सम्बन्ध भी है। विवाह शब्द का उल्लेख ऋगवेद के ब्राह्मण ग्रन्थ 'ऐतरेय' में पृथ्वी और सूर्य के विवाह के रूप में अथवा विश्व के सर्वप्रथम ग्रन्थ ऋगवेद में सूर्या और सोम के विवाह रूप में उपलब्ध है। पुरूष और प्रकृति का संगम ही पूर्ण कहलाता है अन्यथा दोनों ही अपूर्ण है। सूर्य का आधा दृश्य भाग तत्व प्रधान पुरूष वाह्य संचालक मानते है तथा रात्रि प्रधान आधे अदृश्य भाग को सोम प्रधाना प्रकृति रूप स्त्री मानते है। दोनों सूर्य और पृथ्वी शक्तियों का विवाह विश्व को सुख, शान्ति और समृद्धि प्रदान करता है। पृथ्वी शक्ति से सूर्य किरणों में ताप और सूर्य शक्ति से वर्षा द्वारा पृथ्वी का प्रीणन होता है।

यजुर्वेद शतपथ में महर्षि याज्ञवल्क्यक का विज्ञान है कि एक ही तत्व स्त्री पुरूष दो भागों में विभक्त है अतः परस्पर आकर्षण नैसर्गिक है। लौकिक प्रेम में आसक्ति और आध्यात्मिक प्रेम 'भक्ति' है। लौकिक आसक्ति संसार है और प्रभु आसक्ति ही भक्ति है। अतः दोनों का मिलन–विवाह रूप सन्तुष्टि, उत्पत्ति और मुक्ति है।)

विवाह लोकिक–गीत

मगन भई तुलसा राम गुण गाइके
मगन भई, मगन भई राम गुण गाइके

सव कोऊ, चाली–डोली पाल की रथ जुडवाइके
साधु चालै पैया पैया चींटी सो बचाइके

मगन भई तुलसा रानी कृष्ण गुण गाइके
मगन भई तुलसा रानी राम गुण गाइके

तुलसी माता का भजन
(लोक गीतों में)

तुलसी माँ रानी नमोः नमोः, हर की पटरानी नमोः नमोः
जो कोई तुलसा सुबह को गावें, ठाकुर जी के दर्शन पावे
तुलसा माँ रानी............

जो कोई तुलसा दोपहर में गावें, ठाकुर जी को भोग लगावे
इस के भंडार भरे मिलेंगे, उनके सारे काज सरेंगे
तुलसा माँ रानी............

जो कोई तुलसा शाम को गावें, ठाकुर जी का शयन करावें
उनके सब सन्ताप हरेंगे, ठाकुर माला–माल करेंगे
तुलसा माँ रानी............

जो कोई तुलसां रात को गावें, यम के दूत नहीं आवें
वैंकुण्ठ में वास करेंगे, ठाकुर जी के पास रहेंगे
तुलसा माँ रानी............

लोक गीतों में तुलसी माँ के गीत

सात सखी रल पानी नै चाली तो, सातो ही एक हुनयारी ओ राम।
भरण गई जल जमना का पानी, गेला तुलसा होली ओ राम।।
सखी सहेली न्यू उठ बोली, तुलसां ओढ कुआरी ओ राम।
रोंदी सुबकदी घर में री आई बाबल ने गोद उठाई ओ राम।।
के मेरी बेटी तू भूता डराई के अलसेडा मैं आई ओ राम।
ना मेरे बाबल मै भूता डराई ना अलसेडा मैं आई ओ राम।।
के मेरी बेटी तू बाबल ने मारी के मायड धमकाई ओ राम।
ना मेरे बाबल मैं बापू नै मारी ना मायड धमकाई ओ राम।।
के मेरी बेटी तू बीरा नै मारी, के भाभीयां ने दुतकारी ओ राम।
ना मेरे बाबल में बीरा नै मारी, ना भाभीयां ने धमकाई ओ राम।।
सात् सहेली पानी नै चाली सातों ही एक हुनयारी ओ राम।।
संग की सहेली न्यू उठ बोली तुलसां ओढ़ कुवारी ओ राम।
कहो तो बेटी तनै चन्दा घर ब्याहू, कहो तो सूरज परणादू ओ राम।।
चन्दा तो मेरे बाबल रात अंधेरी, सूरज की किरण धनेरी ओ राम।
अपना तो वर मैं आप बता दूॅ, वर ढूंडो कृष्ण मुरारी ओ राम।।
पांच सुपारी रोक रूपया तो, तुलसां की होईये समाई ओ राम।
आला गीला बांस कटाया तो, तोरण खम्ब गडाये ओ राम।।
चुगमा-चुगमा सखि यां बुलाई तो, हंस-हंस मंगल गाया ओ राम।
पढा लिखा पंडित बुलाया तो, हर हथ लेवा जुडाया ओ राम।।
तुलसां का चीर ठाकुर का दुपट्टा तो, घुल-घुल गांठ लगाई ओ राम।
तुलसां नै ब्याह के ठाकुर घर आए तो, होई सै जय जयकार ओ राम।
मै तनै पूछुंए मेरी तुलसां किस विध कृष्ण वर पाये ओ राम।।

-: गीत :-

मै तनै पूछं ए तुलसा रानी, किस विध कृष्ण पाये मेरे राम।
सामण मै ए सखी साग ना खायो, भादवे मैं दहीये ना खाई मेरे राम।
आसुज मै ए सखी पितर जिमाए, कार्ति ठण्डेजल नहाई मेरे राम।
मंगसर मैं ए सखी मांग भराई, पौ में रजाई नहीं ओढी मेरे राम।
माघ मै ए सखी मांग भराई, पौ मे रजाई नहीं ओढी मेरे राम।
चैत मै ए सखी फल–फूल फूलै, तोड काकडी ना खाई मेरे राम।
बैशाख मै ए सखी गर्मी पडे सै, कदै ना पंखा डोल्या मेरे राम।
जेष्ठ मै ए सखी तपत पडे सै, बिन मांगा नीर पिलाया मेरे राम।
अषाड मै एक सखी इन्द्र वरसे, कदे ना छत्री ओढी मेरे राम।
बारह महीनें सखी तप करा था, जब कृष्ण वर पाये मेरे राम।
कन्या गावे घर वर पावे, तिरिया पुत्र खिलावे मेरे राम।
बुढिया गावें स्वर्ग सिधारे, विधवा गंगा नहावे मेरे राम।
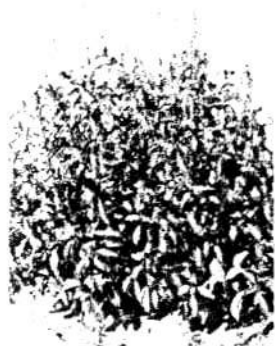
—: गीत :—

मैं तनै पूछूं ए मेरी तुलसां, कौन तेरा मन्दिर चिनाया मेरे राम।
कौन तेरा मन्दिर चिनाया ए तुलसां, कौन तेरी नीम लगाई मेरे राम।
राधा है वो हरि की प्यारी, वो मेरा मंदिर चिनाया मेरे राम।
सांवरिया गिरधारी ठाकुर, वो मेरी नीम लगाई मेरे राम।
मै तनै पूछॅ ए मेरी तुलसां, कौन तेरा बिडला रोप्या मेरे राम।
कौन तेरा बिडला रोप्या ए तुलसां, कौन काचे दूधा सीचां मेरे राम।
राधा है वो हरि की प्यारी, वो मेरा बिडला रोप्या मेरे राम।
सांवरिया गिरधारी ठाकुर, काचे दूधा सीचां मेरे राम।
मै तनै पूछॅ ए मेरी तुलसां, कौन तेरा ब्याह रचाया मेरे राम।
कौन तेरा ब्याह रचाया ए तुलसां, कौन तेरा लगन लिखाया मेरे राम।
राधा तो वो हरि की प्यारी, वो मेरा ब्याह रचाया मेरे राम।
सांवरिया गिरधारी ठाकुर, वो मेरा लगन लिखाया मेरे राम।
मै तनै पूछॅ ए मेरी तुलसां, कौन तेरी गांठ जुडाई मेरे राम।
कौन तेरी गांठ मे ए मेरी तुलसां, मोहर रूपया घाल्या मेरे राम।
राधा तो वो हरि की प्यारी, वो मेरी गांठ जुडाई मेरे राम।
सांवरिया गिरधारी ठाकुर, मोहर रूपया घाल्या मेरे राम।
मै तनै पूछॅ ए मेरी तुलसां, कौन तेरी दात संजोई मेरे राम।
कौन तेरी दात संजोई ए तुलसां, मोहर रूपया घाले मेरे राम।
राधा है वो हरि की प्यारी, वो मेरी दात संजोई मेरे राम।
सांवरिया गिरधारी ठाकुर, मोहर रूपया घाला मेरे राम।
धीरे–धीरे चालो कृष्ण जी, तुलसां के मन्दिर आए मेरे राम।
जी हरिजी म्हारे मन्दिर आए, माणिक मोती लाये मेरे राम।
पांव पडता पंखा डोल्या, चरण शिश नवाया मेरे राम।
गीरी और छुवारे का म्हारे, छप्पन भोग लगाया मेरे राम।

तुलसी जी का भजन

तुलसा महारानी नमो–नमो,
हर की पटरानी नमो नमो।

कौन–से महीने में बोई रानी तुलसा तो,
कौन से महीने में हुई हरियाली।

आषाढ़ के महीने में बोई रानी तुलसा तो,
सावन मास हुई हरियाली।

कौन–से महीने में हुई तेरी पूजा तो,
कौन–से महीने में हुई पटरानी।

कार्तिक के महीने में हुई मेरी पूजा तो,
मंगशिर मास हुई पटरानी।

धूप–दीप नैवेद्य आरती तो,
पुष्पन की बरसा बरसाती नमो–नमो।

धप्पन भोग धत्तीसो व्यंजन तो,
बिन तुलसा हर एक न मानी नमो–नमो।

जो कोई तुलसा को सवेरे गाए तो,
श्री कृष्ण के दर्शन पाए।

जो कोई तुलसा को दोपहर को गाए तो,
श्री खीर–खांड के भोग लगाए।

जो कोई तुलसा माई सांझ को गाए तो,
श्री कृष्ण जी को आरती उतारे।

जो कोई तुलसा को आधी रात को गाए तो,
श्रीकृष्ण जी के चरण दबाए।

तुलसा महारानी नमो–नमो हर की पटरानी नमो–नमो।

—: (लोक—गीत) :—

मै तनै पूछूं ओ म्हारे कृष्णा, थारे नैना सुरमा क्यों महाराज ।
हर गोविन्द भजो नारायण

कार्ति मास दिवाली आई,, स्याही घाली म्हारी माया
हर गोविन्द भजो नारायण।

मै तनै पूछूं ओ म्हारे कृष्णा, थारे हाथो में मेंहदा क्यों महारज।
हर गोविन्द भजो नारायण।

म्हारे घर में शादी हुई थी, मेंहदा मांडा म्हारी वहन
हर गोविन्द भजो नारायण।

मै तनै पूछूं सू म्हारे कृष्णा, थारा क्यों मैला भेष महाराज।
हर गोविन्द भजो नारायण।

म्हारे कपडे धोवी के जाहरें, धोविन मां के उठ जाये।
हर गोविन्द भजो नारायण।

राधा रूकमण पानी नै चाली, रास्ते में मिल गई धोवन माय।
हर गोविन्द भजो नारायण।

मै तनै पूछूं कृष्ण की धोवन, कृष्ण के कपडे कहॉ महारज।
हर गोविन्द भजो नारायण।

थम तो ए राधा रूकमण बहुत बावली, थारे कृष्ण का तीजा ब्याह।
हर गोविन्द भजो नारायण।

राधा रूकमण घर नैरी आई, पैंढी पे धोगड पटकी।
हर गोविन्द भजो नारायण।

मै तनै पूछूं ओ म्हारे कृष्णा, किस विध कराया तीजा ब्याह।
हर गोविन्द भजो नारायण।

राधा भी प्यारी, मैने रूकमण भी प्यारी,
तुलसा ब्याह वन का लग रहा चाय।
हर गोविन्द भजो नारायण।

चलती फिरती प्यारी लागे, बैठे तो घर भर जाये।
हर गोविन्द भजो नारायण।

मुख में घाले तो चर—चरी लागे, चरणामत में आवे महारज।
हर गोविन्द भजो नारांयण।

तुलसी स्तोत्रम्

जगद्धात्रि नमस्तुभ्यं विष्णोश्च प्रियवल्लभे।
यतो ब्रह्मादयो देवाः सृष्टिस्थित्यन्तकारिणः ।।१।।
नमस्तुलसि कल्याणि नमो विष्णुप्रिये शुभे।
नमो मोक्षप्रदे देवि नमः सम्पत्प्रदायिके ।।२।।
तुलसी पातु मां नित्यं सर्वापद्भ्योऽपि सर्वदा।
कीर्तितापि स्मृता वापि पवित्रयति मानवम् ।।३।।
नमाभि, सिरसा देवीं तुलसीं विलसन्त्तनुम्।
यां दृष्टवा पापिनो अर्त्या मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषात ।।४।।
तुलस्या रक्षित सर्वं जगदेतच्चाराचरम्।
या विनिहन्ति पानानि दृष्टवा वा पापिभिर्नरैः ।।५।।
नमस्तुलस्यतितरां यस्यै बद्धवाञजलिं कलौ।
कलयन्ति सुखं सर्वं स्त्रियो वैश्यास्तथाऽपरे ।।६।।
तुलस्या नापरं किंचिद्दैवतं जगतीतले।
यथा पवित्रितो लोको विष्णुसंगेन वैष्णवः ।।७।।
तुलस्याः पल्लवं विष्णोः शिरस्यारोपितं कलौ।
आरोपयति सर्वाणि श्रेयांसि वरमस्तके ।।८।।
तुलस्यां सकला देवा वसन्ति सततं यतः।
अतस्तामर्चयेल्लोके सर्वान् देवान् समर्चयन् ।।९।।
नमस्तुलसि सर्वज्ञे पुरूषोत्तमवल्लभे।
पाहि मां सर्वपापेभ्यः सर्वसम्पत्प्रदायिके ।।१०।।
इति स्तोत्रं पुरा गीतं पुण्डरीकेण धीमता।
विष्णुमर्चयता नित्यं शोभनैस्तुलसीदलैः ।।११।।
तुलसी श्रीर्महालक्ष्मीर्विद्याविद्या यशस्विनी।
धर्म्या धर्मानना देवी देवीदेवमनः प्रिया ।।१२।।
लक्ष्मीप्रियसखी देवी द्यौर्भूमिरचला चला।
षोडशैतानि नामानिं तुलस्याः कीर्तयन्नरः ।।१३।।
लभते सुतरां भक्तिमन्ते विष्णुपदं लभेत्।
तुलसी भूर्महालक्ष्मीः पद्मिनी श्रीर्हरिप्रिया ।।१४।।
तुलसी श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यते।
नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये ।।१५।।

श्री तुलसी चालीसा

।। दोहा ।।

श्री तुलसी महारानी, करूँ विनय सिरनाय।
जो मम हो संकट विकट, दीजै मात नशाय।।

नमो नमो तुलसी महारानी,
महिमा अमित न जाय बखानी।

दियो विष्णु तुमको सनमाना,
जग में छायो सुयश महाना।

विष्णुप्रिया जय जयति भवानि,
तिहूं लोक की हो सुख खानी।

भगवत पूजा कर जो कोई,
बिना तुम्हारे सफल न होई।

जिन घर तव नहिं होय निवासा,
उस पर करहिं विष्णु नहिं बासा।

करे सदा जो तब नित सुमिरन,
तेहिके काज होय सब पूरन।

कातिक मास महात्म तुम्हारा,
ताको जानत सब संसारा।

तब पूजन जो करैं कुंवारी,
पावै सुन्दर वर सुकुमारी।

कर जो पूजा नितप्रति नारी,
सुख सम्पत्ति से होय सुखारी।

वृद्धा नारी करै जो पूजन,
मिले भक्ति होवै पुलकित मन।

श्रद्धा से पूजै जो कोई भवनिधि से तर जावै सोई।

कथा भागवत यज्ञ करावै,
तुम बिन नहीं सफलता पावै।

छायो तब प्रताप जगभारी,
ध्यावत तुमहिं सकल चितधारी।

तुम्हीं मात यंत्रन तंत्रन में,
सकल काज सिधि होवै क्षण में।

औषद्यि रूप आप हो माता
सब जग में तव यश विख्याता।

देव रिषी मुनि और तपधारी,
करत सदा तव जय जयकारी।

वेद पुरानन तव यश गाया,
महिमा अगम पार नहिं पाया।

नमो नमो जै जै सुखकारनि,
नमो नमो जै दुखनिवारनि।

नमो नमो सुखसम्पति देनी,
नमो नमो अघ काटन छेनी।

नमो नमो भक्तन दुःख हरनी,
नमो नमो दुष्टन मद छेनी।

नमो नमो भव पार उतारनि,
नमो नमो परलोक सुधारनि।

नमो नमो निज भक्त उबारनि,
नमो नमो जनकाज संवारनि।

नमो–नमो जय कुमति नशावनि,
नमो नमो सब सुख उपजावनि।

जयति जयति जय तुलसीमाई,
ध्याऊँ तुमको शीश नवाई।

निजजन जानि मोहि अपनाओ,
बिगड़े कारज आप बनाओ।

करूँ विनय मैं मात तुम्हारी,
पूरण आशा करहु हमारी।

शरण चरण कर जोरि मनाऊँ,
निशादिन तेरे ही गुण गाऊँ।

करहु मात यह सब मोपर दाया,
निर्मल होय सकल ममकाया।

मांगू मात यह बर दीजै,
सकल मनोरथ पूर्ण कीजै।

जानूं नहिं कुछ नेम अचारा,
छमहु मात अपराध हमारा।

बारह मास करै जो पूजा,
ता सम जग में और न दूजा।

प्रथमहि गंगाजल मंगवावे,
फिर सुन्दर स्नान करावे।

चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ावे,
धूप दीप नैवेद्य लगावे।

करे आचमन गंगा जल से,
ध्यान करे हृदय निर्मल से।

पाठ करे फिर चालीसा की,
अस्तुति करे मात तुलसा की।

यह विधि पूजा करे हमेशा,
ताके तन नहिं रहै क्लेशा।

करै मास कार्तिक का साधन,
सोवे नित पवित्र सिध हुई जाहीं।

है यह कथा महा सुखदाई,
पढ़ै सुने सो भव तर जाई।

।। दोहा ।।

यह श्री तुलसी चालीसा पाठ करे जो कोय।
गोविन्द सो फल पावही जो मन इच्छा होय।।

श्री तुलसी माता जी की आरती

आरती श्री तुलसी मैय्या की, शाप निवारिणी विष्णु प्रिया की।।
पुण्य प्रेम सद्धर्म प्रदायिनि, अविचल अमल वैकुंठ दायिनि।।
सरु–मानव सौभाग्य विधायिनि, परम पूज्य सतित्व छैय्या की।।
आरती...

सुर–असुर–मानव भय हरता, मधुर अमिय सद् पूत–प्रदाता।
रोग–शोक संकट परित्राता, भव–सागर हित दृढ नैय्या की।।
आरती...

आयु–ओज–आरोग्य–विकाशिनि, दुःख दैन्य दारिद्रय विनाशिनि।
बुद्धि विवेक समृद्धि प्रकाशिनि,
पितर तारिणि मंगल कारिणि हरिप्रिया की।।
आरती...

जय तुलसी माता

जय जय तुलसी माता, सब जग की सुख दाता ।।जय.।।
सब योगों के ऊपर, सब लोगों के ऊपर।
रुज से रक्षा करके भव त्राता ।।जय.।।
बटु पुत्री के श्यामा सुर बल्ली है ग्राम्या।
विष्णु प्रिये जो तुमको सेवे सो नर तर जाता ।।जय.।।
हरि के शीश विराजत त्रिभुवन से हो वंदित।
पतित जनों की तारिणी तुम हो विख्याता ।।जय.।।
लेकर जन्म विजन में आई दिव्य भवन में।
मानवलोक तुम्हीं से सुख संपत्ति पाता ।।जय.।।
हरि को तुम अति प्यारी श्याम वरूण कुमारी।
प्रेम अजब है उनका तुमसे कैसा नाता ।।जय.।।

—: पर्यावरण शुद्धि :—

यजुर्वेद वैश्यदेव काण्ड में आता है–

अतः परंनान्य दणीयसं हि परात्परं यन्महतो महान्तम्।
यदेकमन्यक्त मनन्तरूपम विश्वं पुराण तमसः परस्तात्।।

अर्थात– इस महान शक्तिमान परंब्रह्म से न तो कोई सूक्ष्म परमाणु है और न ही उससे परे कोई महान है।

जो एक होकर भी अव्यक्त है उसके अनन्तरुप है। पुरातन काल से ही सारे विश्व में व्यापक है और अन्धकार से अपनी ज्योति पुंज के कारण बहुत दूर भी है।

ब्रह्माण्ड में अनेक तारागण है जिनमें पृथ्वी भी एक छोटा सा तारा ही है। अनेक सूर्यमंडल, निहारिकाए, आकाशगंगा आदि ब्रह्माण्ड में स्थित है। उस से उपर भव स्वतपः सत्य आदि सातलोक बताए गये है उनमें भी गौलोक सबसे उपर है वही से शापित होकर तुलसी भू मंडल पर अवतरित हुई है। आते समय सभी नक्षत्रों, ग्रहो आदि से असीम ऊर्जा ग्रहण गरती हुई तुलसी भूलोक में अवतरित हुई है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि आदि प्रकृति के सभी सूक्ष्म अंश तुलसी में निहित है। पर्यावरण दूषण का मुख्य कारण है चित्त दूषित होना और गौण कारण है प्रकृति असंतुलन जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, ताप प्रदूषण, थल प्रदूषण आदि। काल और नियिति का पर्यावरण पर प्रभाव सर्व विदित है।

प्रदूषण से सुरक्षा

सूक्ष्म जगत में सब सम्भव है। असम्भव कुछ भी नहीं। कोई काल समय अवधि की भी सीमा नहीं है। पर्यावरण के दोषों को दूर करने के लिए हम प्रभु से शन्ति–पाठ रुप में प्रार्थना करते रहते हैं–

औ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष, ˘ शान्ति पृथ्वी, शान्ति रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्ति विश्वे देवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः सर्व ˘। शान्तिः शन्ति रेव शान्तिः सामा शान्ति रेधि। ऊँ शान्तिः शान्तिः, शान्तिः ओउम्।।

सर्वप्रथम मन एवं चित्त शुद्धि के प्रदूषण को दूर करने के लिये हमें तुलसी रूप वनस्पति जो औषधीय गुणों, देवी एवं सभी नक्षत्रों की ऊर्जा से ओत प्रोत है उसका सेवन करना चाहिए।

चित्त प्रदूषण : ईसा पूर्ण छटी शताब्दी में ग्रीक–चिकित्सा में भिषक–कर्म का कार्य प्रमुख रुप से मन्दिरों में रहने वाले पुरोहितो द्वारा किया जाता रहा है। अरस्तू के पिता मैसिडोनिया के रहने वाले चिकित्सक थे। अरस्तू (382–332 ई0पूर्व) मूलतः प्रकृति प्रेमी थे। उन्होंने मन, शरीर, हृदय के भेदों को समझाया और मन हृदय के दार्शिनिक पक्षों को भी जोडा। आयुर्वेद शास्त्र में पंचतत्व के सिद्धान्त की तरह उन्होंने जल, अग्नि, पृथ्वी, पित्त, रक्त के संयोग से मानव शरीर की रचना की परिकल्पना की और मन, चित्त की शुद्धि के लिये दोषों को दूर करने के लिये सुझाव दिये थे। उस समय भारत में सुश्रुत् शीर्ष पर थे। यह भी एक शौध का विषय है। रक्त दोष को और चित्त मन शुद्धि में तुलसी सक्षम हैं। शुद्ध चित्त/मन से धनात्मक (पोजिटिव) उर्जा होती है।

अर्थात् सकारात्मक तरंगे

(नोट–भारत में औषधीय पौधो के विषय में जानकारी देने वाला प्रथम प्रामाणिक ग्रन्थ ऋगवेद है।) सकारात्मक विचारध ारा से सकारात्मक तरंगे वायुमंडल को शुद्ध करती है।

जल प्रदूषण : गंगाजल की शुद्धि का कारण है जल में विद्यमान वायो मेक्रो वैक्टीरियोफेज नामक जीवाणु जो जल में रहने वाले विषाणुओं को भक्षण कर शुद्ध रखता है। तुलसी में भी अनेकों जैव सक्रिय रसायन जैसे टैनिन सैपोनिन–ग्लाइकोसाइड और एल्फेलाडस कीट प्रतिकारक तथा प्रचण्ड जीवाणु नाशक रसाणु है। तुलसी एक ओर जल को शुद्ध रखती है और दूसरी ओर वायु की शुद्धि। तुलसी में एनाफिलिस जाति के मच्छरों के विरूद्ध कीटनाशी प्रभाव सर्व विदित है तुलसी का इथर निष्कर्ष टी.वी. के जीवाणु माइको वैक्टीरियम टयूवर कुलोसिस का बढना रोकता है तुलसी की टी.वी. नाशक क्षमता विलक्षण है क्योंकि जीवाणु के ह्यूमनस्ट्रेन की वृद्धि को भी रोकती है। वैल्थ ऑफ इंडिया के अनुसार तुलसी के स्वरस में अन्य कई प्रकार के जीवाणुओं के विरूद्ध सक्रिय पाया गया है। अर्थात् इसकी जीवाणु सक्रियता अन्यान्य जीवाणुओं के विरूद्ध कारगर सिद्ध हुई है। इसी प्रकार जल शुद्धि के लिये तुलसी स्वरस में दुद्धी नामक घास के दूध को डालकर शुद्ध किया जा सकता है। उसके बाद नसादर पानी में डाला जावे ताकि जल के दोष दूर हो सके। यह भी एक शौध का विषय है। पर्यावरण शुद्धिकरण में इसका स्वरस सक्रामंक रोगों का नाश करने की शक्ति, कीटनाशक क्षमता और जीवन शक्ति बढाने हेतु पर्याप्त विटामिन रखता है जिस से रक्त बढ सकता है। तुलसी के पीले हरे रंग के पत्तों का सुगन्धित तेल जो कुछ समय बाद श्वेत रंग में बदल जाता है। जिसे तुलसी कपूर भी कहते है।

वायु प्रदूषण : पर्यावरण सुरक्षा में विशेष महत्तव रखता है। वृक्ष दिन में प्राण वायु (पीपल अपवाद है जो अर्हिनिश प्राण वायु) (ऑक्सीजन) छोडते है किन्तु प्राण वायु के अतिरिक्त तुलसी का पौधा प्राणवायु तैयार करता है। यदि तुलसी के पौधे के नीचे पांच ग्राम देशी घी का (गाय का) दीपक जलाया जाए तो करीब एक टन आक्सीजन बनती है। (विज्ञान के अनुसार जलने से ऑक्सीजन का ह्रास होता है किन्तु यहॉ जलने से ऑक्सीजन तैयार होती है) यह एक शौध का विषय है। अतः तुलसी की रोपण करें। तुलसी की सुगन्धित हवा जहॉ तक जाती है वहॉ तक की विषैली एक प्रदूषित वायु शुद्ध होती है वायु के कीटाणु को नष्ट करने के लिये तुलसी का रोपण करते है।

भूमि प्रदूषण : तुलसी के पौधे के सभी भाग औषधीय गुणो के कारण भूमि के प्रदूषण को दूर करने में सहायक है। सूखे हुए पत्तों, जड़ आदि का चूर्ण मिटटी के साथ मिलाकर भूमि दोषों को दूर करता है और उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है।

तुलसी के स्वरस से जल शुद्ध होता है शरीर पर मलने से तुलसी ज्वर में आराम मिलता है और मुंह में रखने से दुर्गन्ध ा दूर होती है। मुंह के छाले दूर होते है वमन बन्द हो जाता है और दस्त साफ होते है। स्वरस से व्रण धोने पर व्रण के कृभि नष्ट हो जाते है और वृण शीघ्र भर जाते है।

ध्वनि प्रदुषण : तुलसी के स्वरस की एक–एक बूंद कान में डालने से व शरीर पर मलने से ध्वनि प्रदूषण प्रभाव कम होता है तिल के तेल के साथ तुलसी स्वरस को मलने से ध्वनि प्रदूषण का प्रभाव शम्नन होता है यह शरीर की विद्युत–ऊर्जा को बनाए रखने में सक्षम है एक उत्कृष्ट रसायन होने के साथ कृभिनाशक व वतावरण शुद्धि कारक है।

जड़ की मिटटी का तिलक चित शुद्धि के लिए उपयुक्त है। भारतीय विद्वानों ने तो तुलसी को पवित्र एक पूजनीय बताकर धर्म ग्रंथों में स्थान दिया है और प्रत्येक घर आंगन में लगाने पर बल दिया है। उषाकाल में तुलसी को जल से सीचने से और दीप जलाकर परिक्रमा करने से मानसिक रोग नष्ट होते है और स्वास्थ लाभ होता है तेज बढ़ता है। तुलसी विषका शमन करती है। मच्छरों को दूर करती है और पर्यावरण शुद्धि में योगदान देती है भगवान का प्रसाद विना तुलसी पत्र के उपयोगी नहीं होता। तुलसी पत्र रखने से प्रसाद के विषाणु नष्ट हो जाते है जो तुलसी का प्रयोग करते है इसके रक्त में विष के प्रभाव को निष्क्रीय करने की क्षमता आ जाती है। कहते है मीरा बाई तुलसी युक्त प्रसाद में अपने गाविन्द को निहार कर प्रयोग करती थी इसलिये राजा द्वारा भेजा विष का प्रभाव निष्क्रीय हो गया।

वास्तुदोष निवारण

मेडिकल साइंस ने बहुत विकास किया है फिर भी बहुत सारी बीमारियों का उपचार नहीं हो रहा है। सभी मेडिकल टेस्टस् में कोई बीमारी नहीं आती। लेकिन बीमारी ज्यों की त्यों या बढती जाती है। इन का कारण वास्तुदोष भी हो सकता है।

दीर्घायु और स्वास्थ्य लाभ के लिये प्रकृति देवी ने हमें असंख्य मूल्य उपहार प्रदान किये है उनमें तुलसी एक अद्भुत औषधि है। कुछ वास्तु विशेषज्ञों की मान्यता है कि तुलसी के पौधे को मकान के ईशान कोण में रखने से लाभ होता है इस तुलसी के गमले के चारों और स्वास्तिक का चिन्ह (चित्र) सिंदूर+रोली से बनाते है। वास्तुदोष को दूर करने के लिये मन्दिरों के कलशों के अन्दर काली तुलसी रखी जाती थी। घरो के निर्माण में नींव में काली तुलसी और मंजरिया/हल्दी की गांठ अन्य सामग्री के साथ रखने से भी दोष नहीं रहता। मकान के चोखाट के उपर दोनों कोनों में तुलसी मंजरी पीली सरसों, अजवाईन, लोंग आदि को सूत की पोटली में रखने से नकारात्मक उर्जा नहीं आती और बीमारियों से निदान मिलता है। मकान में वास्तुदोष दूर करने के लिये तोड़–फोड़ न करना पड़े इसलिये वास्तु विशेषज्ञों से परामर्श करें। तुलसी के पौधे से भी दोष दूर कर सकते हैं। घर में सुख–शान्ति सन्तत्ति, सम्पत्ति, समृद्धि और स्वास्थ्य के लिये तुलसी के पौधे लगावें, पौधों को पाले और विधिवत पूजन करें। इस प्रकार सकारात्मक ऊर्जा से लाभ होगा और ऋणात्मक ऊर्जा का ह्रास होगा।
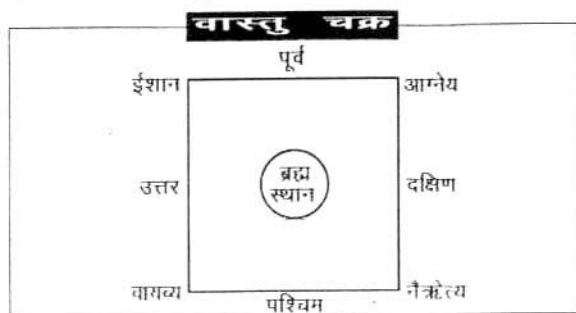
— : वानस्पतिक परिचय :—

तुलसी प्रत्यक्ष देवी है। सर्व सुलभ है। यह भारत में प्रायः सर्वत्र होती है। घरों में, मन्दिरों में, गमलो में, बागों में, खेतों में, पार्को में ही नहीं अपितु वनों, जंगलों में तो तुलसी स्वतः उत्पन्न होती रहती है। विशेषकर जहाँ का तापमान उष्ण हो। पूजा स्थलों में तो इसकी उपदेयता प्रत्यक्ष ही है क्योंकि आध्यात्म और प्रकृति का आध्यात्मिक परम अंश है, चेतना है और दिव्य अभिव्यक्ति है। जैसे शक्ति की मुख्य 52 शक्तिपीठ है उसी प्रकार तुलसी की अनेक जातियाँ है। यह क्षुप जाति की वनस्पति है। तुलसी का पौधा सदा हरित होता है इसे मार्च से जून मास तक लगाते है। सितम्बर और अक्टूबर में यह फलता है। जाडे के दिनों में इसके बीज पकते है। इस का पौधा आधा मीटर से एक मीटर तक ऊँचा होता है इसकी जड पतली लम्बी और रेशेदार होती है। इसकी शाखॉए सीधी फैली हुई और सघन व झाडदार होती है। पत्र अण्डाकार आयताकार व सूक्ष्म कंगूरेदार होते है। इसके पत्र में एक प्रकार की तीव्र सुगन्ध होती है। इसकी पुष्प मंजरी बहुत कोमल और अनेक रंगो से युक्त होती है फूलों का प्रायः रंग सफेद होता है जो शीतकाल में आते है मंजरी पर बैंगनी या रक्त सी आभा लिए बहुत छोटे पुष्प क्रमों में लगते है हृदयवत होते है। बीज चपटे, पीले वर्ण के छोटे काले चिन्हों के अण्डाकार होते है। अधिक पानी से तुलसी के पौधे मर जाते है। पत्तों में छिद्र होने पर गाय के कण्डों की राख छिड़के, पौधो के विकास के लिये उबली चाय की पत्तियों को धोकर खाद के रूप में प्रयोग करें।

तुलसी की 60 से अधिक प्रजातियाँ है

किन्तु इनमें मुख्य है।

श्वेत तुलसी, काली तुलसी, मरूवा तुलसी, रामा तुलसी, वन तुलसी, कपूर तुलसी आदि के नाम अधिक प्रचलित है।

तुलसी के अन्य नाम :—

सुरसा (सुन्दर चरपरे स्वाद वाली) ग्राम्या (ग्रामों में पायी जाने वाली) सुलभा (सर्वत्र सहज मिलने वाली) बहुमंजरी (बहुत

बीर वाली) अपेत राक्षसी (राक्षस योनियों को दूर करने वाली) गौरी (श्वेत तुलसी) भूतधनी (भूत योनियों का हनन करने वाली) देव दुन्दभि (नगाडो के सदृश उठी हुई मंजरी युक्त) विदेशों में तुलसी के अलग–अलग नाम है अरब में फरंज मुश्के, इग्लैंड में होली बैसिल।

श्वेत तुलसी की पहचान : जिस तुलसी के पत्ते श्वेताभ हरित हो, शाखाए मन्द हरे रंग की हो।

काली तुलसी : जिस तुलसी के पत्ते और शाखाए गहरे हरे रंग की और बैंगनी आभा से युक्त हो इसके पत्ते नीलाभ कुछ बैंगनी रंग लिये होते है। गुणधर्म की दृष्टि से काली तुलसी (कृष्ण) को श्रेष्ठ माना जाता है।

बन तुलसी : **(अभिनव वूटी दर्पण)** इसकी शाखाए और डंडिया हरे रंग की अथवा फीकी पीलापन युक्त हरे रंग की होती है पत्ते–2 से 4 सै.मी. अंडाकार अनीदार और नुकीले होते है। शाखाओं के अन्त में फूलों की मंजरी लगती है। उसमें बीज कोष लगते है। बीज नन्हें–2 काले रंग के किचिंत लम्बें एक और महराव का चिन्ह और दूसरी और चपटे तथा मोटी नाक वाले होते है। वे गन्ध हीन होते है।

तुलसी के औषधीय गुण

धन्वन्तरि निघण्टु में लिखा है :–

तुलसी लघुरूष्णा च रक्षा कफ बिना शिनी।
कृमिदोषम् निहन्त्यैषा, रुचिक द्वल्हिदीपनी।।

अर्थात् – तुलसी लघु उष्ण, रुक्ष और कफनाशक होती है। कृमि दोपहर रूचिकर और अग्नि दीपक होती है।

भाव प्रकाश निघण्टु मे –

तुलसी कटुका तिक्त, ह्ययोष्ण दाह पित्तकृत्।
दीपनी कुष्ठ कृच्छारुन, पार्श्वरुक्कफवातजित्।।

अर्थात् – तुलसी कटु, तिक्त हृदय को हितकर उष्ण, दाह तथा पित्तकारक अग्नि दीपक कुष्ठ, मूत्र कृच्छ, रक्त विकार, पसली की पीडा, कफ और वात को दूर करने वाली है

तुलसी के औषधीय उपयोग

(नोट : चिकित्सक के निर्देश पर ही तुलसी से उपचार करें)

(रविवार को तुलसी का उपयोग निषेध है।)

ज्वर : 5 तुलसी के पत्तों और 2 काली मिर्च का सेवन करने से ज्वर में आराम मिलता है।

शीत ज्वर : वन तुलसी के पत्तों का रस तथा काली मिर्च, सफेद मिर्च का चूर्ण मिलाकर देने से शीत ज्वर शान्त होता है।

चेचक : तुलसी की ताजा पत्तियों और अजवायन को पीसकर अथवा खरल करके प्रतिदिन लेप करने से लाभ होता है।

खासी : 5 तुलसी के पत्ते और 2 भूनी हुई लोंग को चुसने से शुष्क खासी में आराम मिलता है।

प्रतिश्याय (जुकाम) : तुलसी पत्र 31, काली मिर्च–5 व अदरक मिलाकर चाय, गुड डालकर, पिलावे लाभ होगा।

बच्चों के रोग :

पेट दर्द : तुलसी पत्र स्वरस में अदरक समभाग मिलाकर थोड़ा गुनगुणा करके देने से लाभ होता है।

काली खॉसी : तुलसी दल व काली मिर्च समभाग खरल करके, मधु के साथ–साथ गुनगना करके देने से 2–3 बार देने से लाभ होता है।

दस्त लगना : तुलसी के पत्तों की स्वरस व पान के समभाग रस का गुनगना करके पिलाने से दस्त खुलकर आता है। पेट फूलना, अफारा दूर होने में आराम मिलता है।

पित रोग : तुलसी के पत्तों का रस और अदरक का रस–समान भाग लेकर उस में निम्बू का रस मिलाकर लें पित शान्त होगा।

आम बात : तुलसी के पत्र स्वरस में अजवाइन मिलाकर सेवन करें।

पेट दर्द : पेट में दर्द हाने पर तुलसी की ताजा पत्तियों का रस (करीव 5 ग्राम) देने से लाभ होगा।

अजीर्ण रोग : तुलसी मंजरी, काला नमक मिलाकर सेवन करें।

पेट के कृमि : तुलसी पत्र 21, बाय बिंड के साथ पीसकर सुबह शाम लेने से पेट के कृषि मर जाते है।

मुख दुर्गन्ध : भोजन के बाद 5 तुलसी के पत्तों को खाने से मुख में बांस नहीं आती।

मुंह के छाले : तुलसी के पत्ते नग–3, हररोज सुबह–शाम खाकर पानी पीने से लाभ होता है।

दान्त के कीडे : जिस दांत मं कीडा लगा है वहॉ पर तुलसी के पत्ते के स्वरस में कपूर मिलाकर रूई का फोआ रखने से आराम मिलता है।

उल्टी (वमन) : तुलसी और अदरक रस समभाग शहद के साथ लेने से लाभ होता है।

तुलसी के पत्तों रस व छोटी इलायची का चूर्ण थोड़ी सी चीनी मिलाकर पीने से उल्टी में आराम मिलेगा।

सफेद दाग : गंगाजल के साथ तुलसी पत्र को खरल करके लगावें नियमित लगाने से लाभ होगा।

बाल तोड़ : बाल तोड़ होने पर तुलसी पत्र पीपल पत्र का स्वरस लगाने से आराम होता है।

स्त्री सम्बन्धी रोग :

गर्भ धारण : किसी स्त्री को मासिक धर्म होती है और गर्भ नहीं ठहरता तो स्त्री मासिक धर्म के समय तुलसी के बीज चबाये या काढ़ा करके पीये, गर्भ धारण हो जाएगा।

प्रसव पीड़ा : प्रसव पीड़ा में तुलसी के स्वरस को पिलाने से प्रसव पीड़ा से आराम मिलता है।

विविध रोग नाशक रोग :

वजन कम करना : तुलसी की पत्तियो को दही या छाछ के साथ सेवन करने से वजन कम होता है।

परिवार नियोजन : कृतिम उपायों के प्रयोग से दिन–प्रतिदिन अनेक मानसिक और शारीरिक कण पैदा होते है मासिक–धर्म से निपटने के बाद तुलसी के पत्तों का काढा 3–4 दिन तक स्त्री को निरन्तर पिलाये गर्भ नहीं ठहरेगा। शोध का विषय है।

हाई ब्लड प्रेशर : 100 ग्राम गाय के दूध की ताजा दही में 10 पत्ते तुलसी के खरल करके 40 दिन तक प्रयोग करें लाभ होगा। हृदय की दुर्बलता में लाभ होगा।

लो ब्लड प्रेशर : तुलसी स्वरस को त्वचा पर मलने से स्नायु संस्थान सक्रिय हो जाता है।

बुद्धि–वर्धन : तुलसी के 5 पत्तियॉ जल के साथ प्रतिदिन लेने से बुद्धि में वृद्धि के साथ–साथ कान्ति भी बढ जाती है। इसके साथ–साथ सूर्य नमस्कार और सूर्य का अर्घ्य भी देना चाहिए।

कैंसर : 30 ताजी पत्तियॉ तुलसी की या इस से भी अधिक पीसकर नित्य पिलाने से कैंसर के कीटाणुओं की गति रूकती है यह शोध का विषय है सत्यता के लिए शोध अनिवार्य है। गाय की ताजी दही के मठठे में 35 तुलसी की पत्तिया को खरल करके लेवें। लाभ होगा।

ब्लड कॉलेस्ट्रोल : प्रातः तुलसी की ताजा पत्तियों का सेवन कालेस्ट्रोल को सामान्य बना देता है और अगर 5 पत्तियों का रस गर्म पानी के साथ सेवन करे तो मोटापा भी कम होता है।

हृदय रोग : नित्य तुलसी की ताजा पत्तियों का स्वरस गो–अर्क में मिलाकर सेवन करने से हृदय रोग में लाभ होता है।

सांस फूलना : सांस फूलने की शिकायत होने पर काली तुलसी के पत्ते काले नमक के साथ मुंह में रखने से लाभ होता है।

ऑक्सीजन की कमी होने पर काली तुलसी के पत्ते चुसे।

ब्लड–सूगर : मिठठी तुलसी के पत्तों का चूर्ण 10 ग्राम, सदाबहार के पत्तों का चूर्ण 5 ग्राम, नौशादर 1 ग्राम प्रातः सेवन करे (करीब 1 ग्राम की मात्रा में) अथवा तुलसी पत्र छुई–मुई के पत्ते, बेल पत्र समभाग का सेवन करें।

अधिक जानकारी के लिये संकलनकर्ता की दिव्य–तुलसी (रोग निदान) पुस्तिका देखें।